अमर चित्र कथा

राम के पूर्वज

क्र. ५७२ | रु. ९०

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्त्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके - अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं - भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से खरीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ट साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास-परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ट कहानियाँ

कथा
कमला चंन्द्रकांत

चित्र
राम वाईरकर

संपादक
अनंत पै

मुखपृष्ठ
सी.एम.विटणकर

Amar Chitra Katha Pvt Ltd
© Amar Chitra Katha Pvt Ltd, 1977, Reprinted January 2023,
ISBN 978-81-8482-270-0
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India.
Printed at Zirius Images Pvt. Ltd, Bhiwandi, Thane - 421 311.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com

This book is sold subject to the condition that the publication may not be reproduced, stored in a retrieval system (including but not limited to computers, disks, external drives, electronic or digital devices, e-readers, websites), or transmitted in any form or by any means (including but not limited to cyclostyling, photocopying, docutech or other reprographic reproductions, mechanical, recording, electronic, digital versions) without the prior written permission of the publisher, nor be otherwise circulated in any form of binding or cover other than that in which it is published and without a similar condition being imposed on the subsequent purchaser.

राम के पूर्वज
राम के प्रपितामह दिलीप इक्ष्वाकु वंश के पवित्र रत्न थे। वे बड़े प्रतापी और धर्मपरायण थे। अपनी पत्नी सुदक्षिणा का अटूट प्रेम तथा प्रजा की अपार भक्ति उन्हें प्राप्त थी। उन्हें बस केवल एक कष्ट सालता रहता था कि वे निस्संतान थे।
एक दिन, दिलीप को सूझा।
गुरु वशिष्ठ से मंत्रणा कर देखूँ। शायद वे कुछ उपाय बतायें।
वे अवश्य कृपा करेंगे।
कुछ दिन बाद –
मैंने मंत्रियों को राज-काज सौंप दिया है, अब मैं मुनिवर के पास चल सकता हूँ।

मुनि के आश्रम में --
राज्य में सब कुशल मंगल तो है न !
गुरुदेव! आपकी दया से प्रजा बहुत संतुष्ट है राज्य में पूर्ण शांति है। फिर भी ...
... मेरी पत्नी और मैं, हम दोनों ही दुखी हैं। हम दोनों एक पुत्र के लिए तरस रहे हैं।
वशिष्ठ ने कुछ पल के लिए आँखें बंद कीं।
बहुत पुरानी बात है - तब गंगा स्वर्ग में बहती थीं। तुम अपनी प्राणप्रिया पत्नी सुदक्षिणा के साथ इंद्र से भेंट करने गये थे।
"वापस आते समय तुम्हारे रास्ते में अलौकिक गाय सुरभि खड़ी थी।"
अहा, लगता है अयोध्या का युवराज अपनी वधू के साथ मुझे प्रणाम करने आ रहा है। उसे कई प्रतापी पुत्रों का आशीर्वाद दूँगी

"पर तुम नवपरणीता के प्रेम में ऐसे खोये थे कि सुरभि की ओर तुम्हारा ध्यान ही नहीं गया। उसने अपमानित अनुभव किया और अपने इच्छित आशीष को शाप में बदल दिया।"
जब तक मेरे बच्चों की सेवा करके अपने पाप नहीं धो लोगे तब तक, उद्दंड राजकुमार, तुम निस्संतान रहोगे।
"लेकिन गंगा की कलकल ध्वनि इतनी तेज़ थी कि तुम शाप को सुन नहीं सके और सरपट चले आये।"
गुणीजन कहते आये हैं कि जो पूजनीय जनों का अपमान करते हैं वे स्वयं अपना अहित करते हैं।
मुनिश्रेष्ठ! यह भूल मुझसे अनजाने में हो गयी। मुझे प्रायश्चित्त का उपाय बताइए, गुरुदेव।
सुनो, अपनी पत्नी के साथ तुम सुरभि की पुत्री नंदिनी की सेवा करो। उसकी कृपा हो गयी तो तुम्हारी मनोकामना पूरी हो जायेगी।

तभी नंदिनी मुनि के पास आकर खड़ी हो गयी।
भोर की वेला में सुदक्षिणा को नंदिनी को वन में पहुँचाने जाना होगा। शाम को उसकी प्रतीक्षा में बैठना होगा। तुम्हें सारे दिन उसकी सेवा करनी होगी।
हृदय से सेवा करके तुम नंदिनी के कृपापात्र बनकर वीर पुत्रों के पिता बन सकोगे।
सुदक्षिणा प्रतिदिन भोर होने के पहले नंदिनी की पूजा करती...
... फिर उसे जंगल तक छोड़ने जाती।

शाम को गऊ का स्वागत करने के लिए यहीं बैठी मिलूँगी।
दिन भर दिलीप नंदिनी की सेवा में लगे रहते। वह जहाँ जहाँ जाती उसके पीछे-पीछे चलते।
वह थमती, तभी वे रुकते।
जब वह बैठ कर सुस्ताती, तभी वे दम लेते।
प्रति दिन शाम को -
ओह, मेरी प्राणप्रिया रानी नंदिनी की प्रतीक्षा कर रही है!
इसी तरह इक्कीस दिन बीत गये।

बाईसवें दिन नंदिनी जंगल से भी बाहर निकल गयी।
राजा बड़े धीरज से सेवा करता आया है। आज उसकी शक्ति की परीक्षा लूँ।
हिमालय की घाटियों में वह विचरने लगी...
शिव की उपत्यका में चली गयी।
कोई बात नहीं। वह तो पवित्र है, उसे कोई हानि नहीं पहुँचा-येगा।
दिलीप प्रकृति की शोभा निहारने लगे। अचानक –
मैं उसकी रक्षा कर रहा हूँ। उसे छेड़ने की हिम्मत किसने की?
आं...आं...आं
उपत्यका की ओर दौड़े तो देखा नंदिनी को एक सिंह ने दबोच रखा है।
माँ, मैं सिंह को मार गिराऊँगा और तुम्हें छुड़ा लूँगा।
लेकिन यह क्या! दिलीप की तो बाँह ही नहीं उठ रही!

और जब शेर ने बोलना शुरू किया तो वह चकित रह गया।
राजन्! मैंने तुम पर मंत्र चला दिया है। शिव ने इस वृक्ष की रक्षा के लिए मुझे नियुक्त किया है। शिव और पार्वती को यह बेटे जैसा प्यारा है। गाय को अपनी धृष्टता का दंड भोगना पड़ेगा।
नहीं, मैं अपने गुरु की गऊ को मारने नहीं दूँगा। उसकी जगह मेरे प्राण ले लो।

यह कैसे हो सकता है? अपराधी तो गाय है। तुम तो भक्त पुत्र जैसे उसके पीछे चले आये हो।
और भक्त पुत्र की तरह मैं उसके लिए प्राण देना चाहता हूँ।

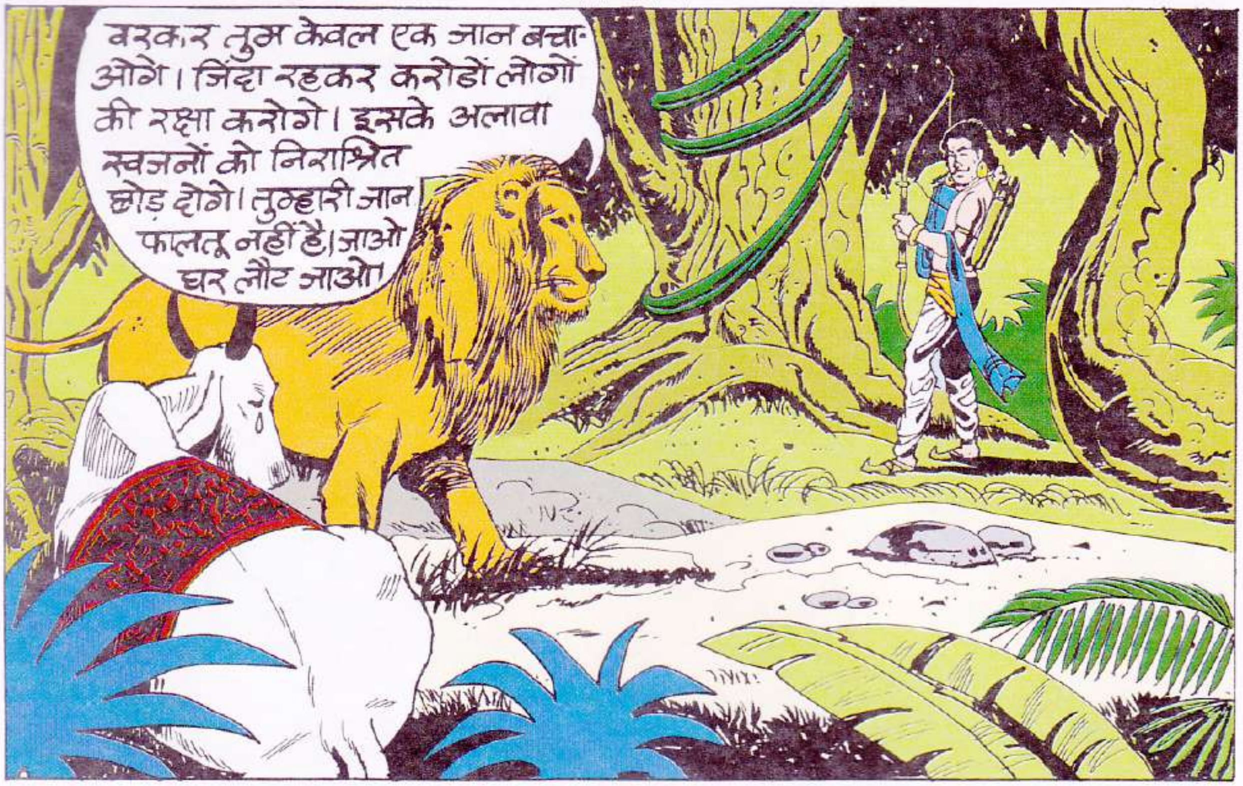
मरकर तुम केवल एक जान बचाओगे। जिंदा रहकर करोड़ों लोगों की रक्षा करोगे। इसके अलावा स्वजनों को निराश्रित छोड़ दोगे। तुम्हारी जान फालतू नहीं है। जाओ घर लौट जाओ।

यदि शिव का वृक्ष नष्ट हो जाता तो क्या तुम शिव को मुँह दिखा पाते! मैं भी अपने गुरु का विश्वास कैसे तोड़ूँ?
गुरु से क्यों डरते हो? दान-दक्षिणा देकर उन्हे खुश कर देना।

लेकिन मेरे स्वाभिमान का क्या होगा? जीवन चाहे चला जाये पर अपने नाम पर कलंक नहीं लगने दूँगा। तुम दया करके मेरी जान ले लो और मेरी गऊ को जाने दो।
जैसी तुम्हारी इच्छा!

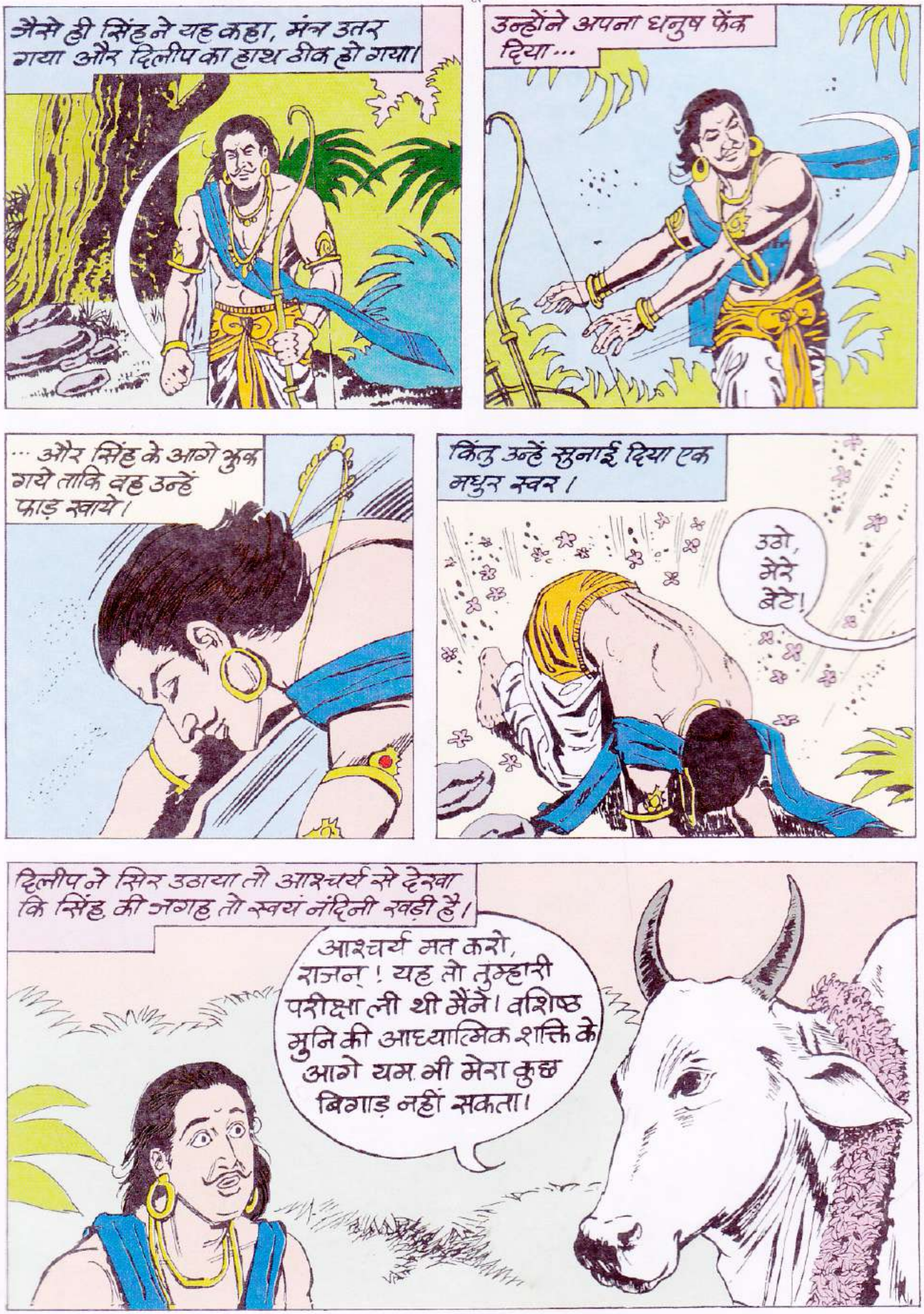
जैसे ही सिंह ने यह कहा, मंत्र उतर गया और दिलीप का हाथ ठीक हो गया।
उन्होंने अपना धनुष फेंक दिया ...
... और सिंह के आगे झुक गये ताकि वह उन्हें फाड़ खाये।
किंतु उन्हें सुनाई दिया एक मधुर स्वर।
उठो, मेरे बेटे!
दिलीप ने सिर उठाया तो आश्चर्य से देखा कि सिंह की जगह तो स्वयं नंदिनी खड़ी है।
आश्चर्य मत करो, राजन्! यह तो तुम्हारी परीक्षा ली थी मैंने। वशिष्ठ मुनि की आध्यात्मिक शक्ति के आगे यम भी मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकता।

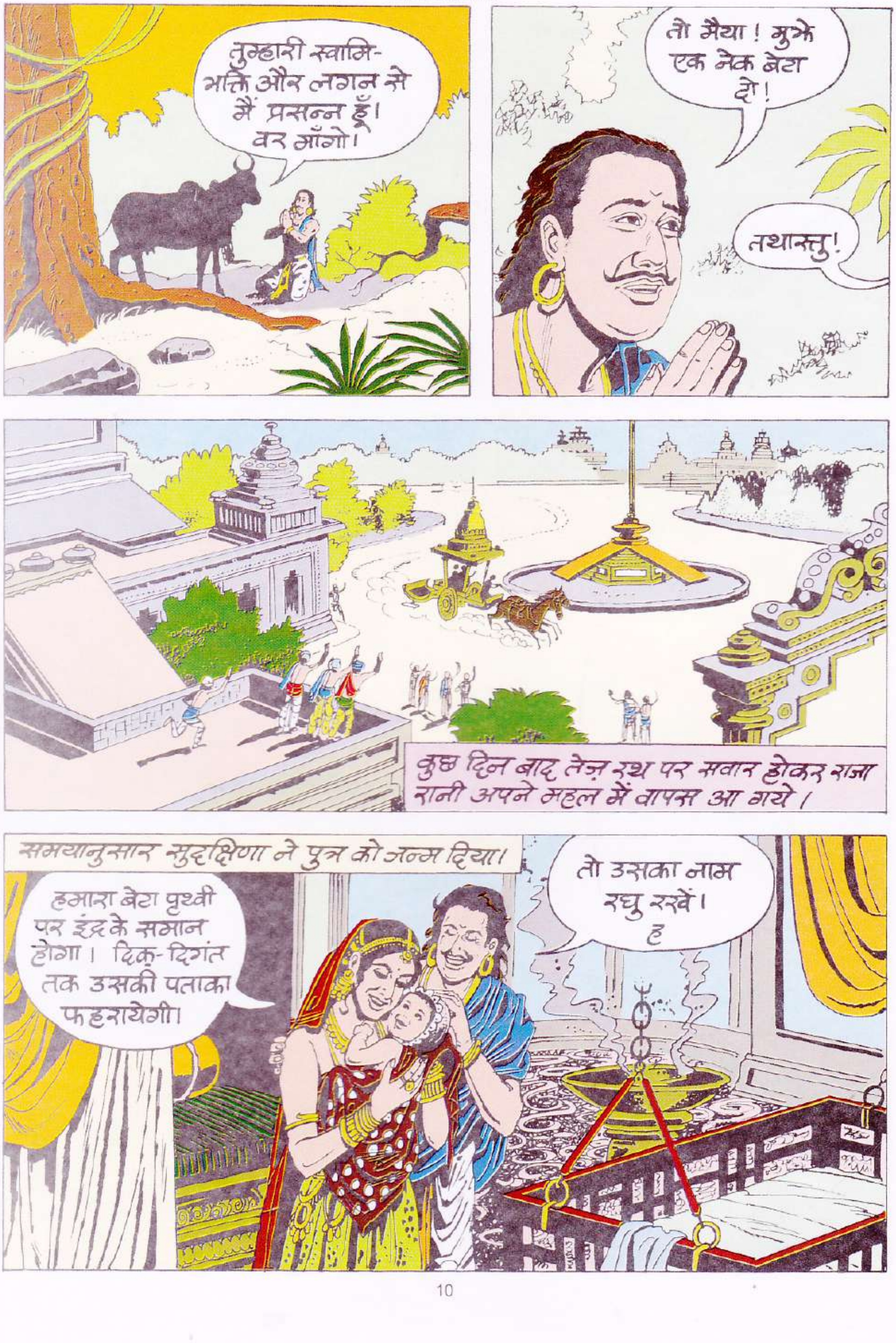
तुम्हारी स्वामि-भक्ति और लगन से मैं प्रसन्न हूँ। वर माँगो।
तो मैया! मुझे एक नेक बेटा दो!
तथास्तु!
कुछ दिन बाद तेज़ रथ पर सवार होकर राजा रानी अपने महल में वापस आ गये।
समयानुसार सुदक्षिणा ने पुत्र को जन्म दिया।
हमारा बेटा पृथ्वी पर इंद्र के समान होगा। दिक्-दिगंत तक उसकी पताका फहरायेगी।
तो उसका नाम रघु रखें।

जब रघु पढ़ने-लिखने लायक बड़ा हुआ –
आप पृथ्वीतल पर सर्वश्रेष्ठ विद्वान हैं। महात्मन्, आध्यात्मिक शिक्षा के लिए मेरा बालक आपकी शरण है।
और रघु को शस्त्र-विद्या स्वयं दिलीप ने सिखायी।
बड़ा होकर रघु बड़ा दयालु और वीर साबित हुआ।
अहा! मेरा होनहार बेटा! अब इसका विवाह करके इसे उत्तराधिकारी घोषित कर देना चाहिए।
उत्तराधिकार समारोह के कुछ वर्ष बाद –
बेटा, केवल इंद्र के पास सौ यज्ञ करनेवाले की पदवी है, मैं भी अश्वमेध करके वह पदवी प्राप्त करना चाहता हूँ। हर मित्र और शत्रु राज्य में यज्ञ का अश्व जायेगा, और तुम उसकी रक्षा करोगे।

रघु अपने सैनिकों के साथ एक के बाद दूसरे राज्य को परास्त करते चले गये।
ठीक है, अभी तो तुम जीत गये, पर एक दिन बदला जरूर लूँगा।
एक दिन तुम्हें भी ऐसा ही अपमान झेलना होगा!
उधर देवताओं का राजा इंद्र घबराया।
अगर दिलीप ने अश्व-मेध यज्ञ पूरा कर लिया तो शत यज्ञ करनेवाले की पदवी पर केवल मेरा ही अधिकार नहीं रहेगा।
इंद्र अपनी मायावी शक्ति से अदृश्य रहकर घोड़े को ले भागा।
अश्व! चोरी हो गया!
लेकिन चोर दिखायी तो नहीं देता!
इंद्र भूल गया था कि रघु पर नंदिनी की कृपा दृष्टि है। उसकी कृपा से परेशान रघु को दिव्य दृष्टि मिल गयी।
अरे! लगता है मुझे दिव्य दृष्टि मिल गयी है।

उन्होंने देखा कि चोर तो स्वयं देवराज इंद्र हैं।
आदरणीय! घोड़े को छोड़ दीजिए। आपको तो हमारे शत्रुओं को परास्त करना चाहिए। आपको यज्ञ का बहुत बड़ा भाग मिलेगा। आप अड़चन क्यों डाल रहे हैं?
रघु के उदात्त वचनों से इंद्र बहुत प्रभावित हुए। रथ रोककर बोले –
राजकुमार, बोलते बहुत अच्छा हो। पर यह यज्ञ पूरा करके तुम्हारे पिता मेरी पदवी छीन लेना चाहते हैं। यह मुझे स्वीकार नहीं।
उत्तर में रघु ने उनकी ओर निशाना साधा।
तो पहले मुझे मार डालिए तभी घोड़ा मिलेगा।
तीर निशाने पर लगा।

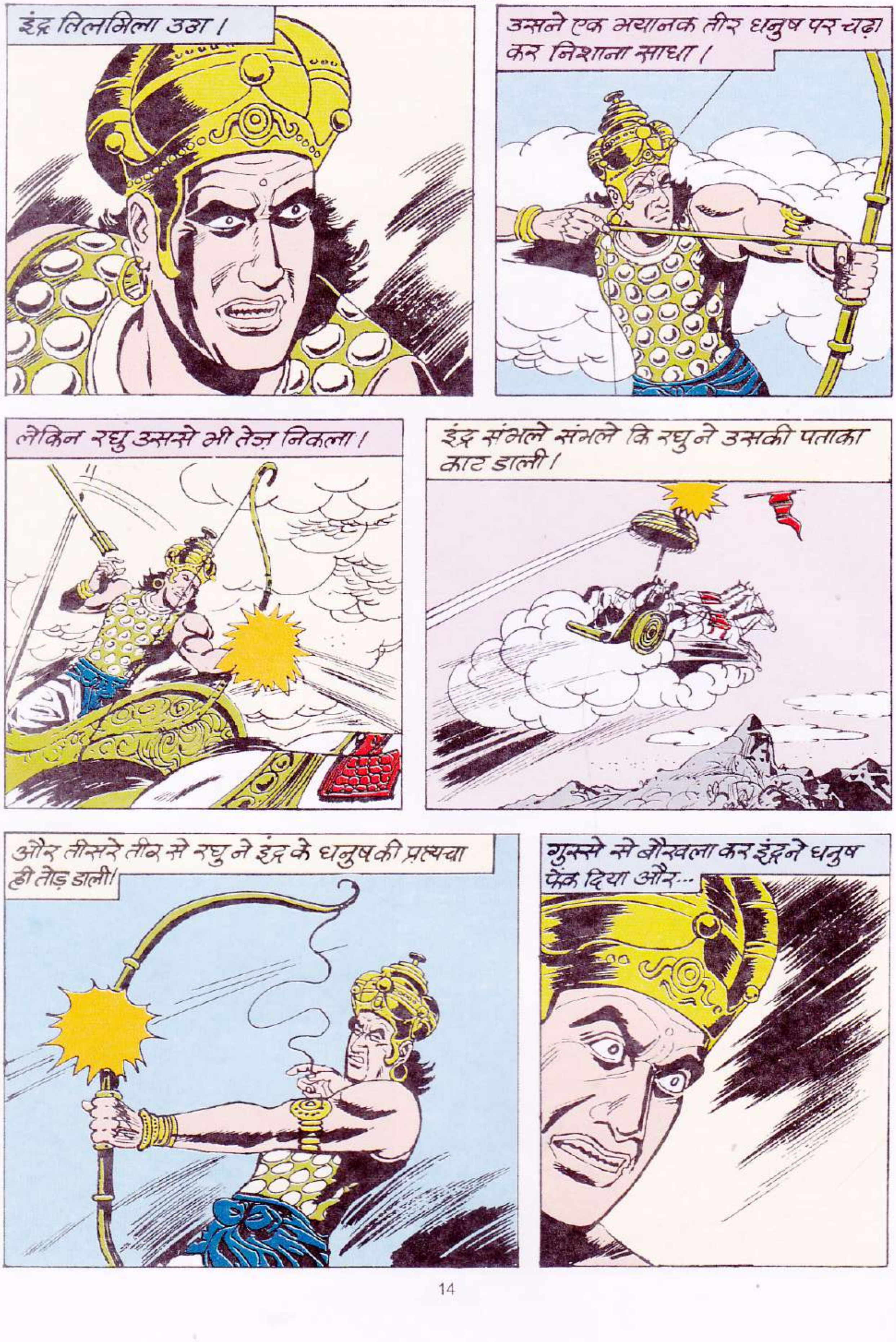
इंद्र तिलमिला उठा।
उसने एक भयानक तीर धनुष पर चढ़ा कर निशाना साधा।
लेकिन रघु उससे भी तेज़ निकला।
इंद्र संभले संभले कि रघु ने उसकी पताका काट डाली।
और तीसरे तीर से रघु ने इंद्र के धनुष की प्रत्यंचा ही तोड़ डाली।
गुस्से से बौखला कर इंद्र ने धनुष फेंक दिया और...

...अपना अमोघ अस्त्र, वज्र, उठाया...
...और रघु की ओर चलाया।
हाय! राजकुमार धराशायी हो गये!
अब राजा को हम क्या मुँह दिखायेंगे?
यह क्या? दूसरे ही क्षण रघु तो उठ खड़े हुए! इंद्र ठगा-सा रह गया।
कमाल है, पर्वत तक नहीं सह पाते और तुम मेरे वज्र की मार सह गये हो! सिवाय घोड़े के जो चाहो माँग लो!
तो, भले ही मेरे पिता सौवाँ यज्ञ न पूरा कर पायें किंतु उन्हें सहस्त्र यज्ञों का फल मिले। ... और मेरे अयोध्या पहुँचने के पहले ही मेरे पिता को इसका पता चले।
तथास्तु!
और इंद्र का रथ स्वर्ग की ओर उड़ गया।

इंद्र ने वचन पूरा किया। गर्वोन्नत पिता अपने विजेता पुत्र की अगवानी के लिए खड़े थे।
मेरे लाल! इंद्र के दूत ने तुम्हारी वीरता की पूरी कहानी सुना दी है। वैसे तुम्हारे यह घायल हाथ तुम्हारा गुण गा रहे हैं।
बाद में -
अब यह राजपाट तुम्हारे योग्य हाथों में सौंपकर मैं तुम्हारी माँ के साथ वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण करना चाहता हूँ।
दिलीप ने सुदक्षिणा के साथ वन-गमन किया और रघु राजा बने।

कुछ ही समय बाद रघु के द्वारा पराजित राजाओं ने विद्रोह कर दिया।
यदि तुम्हारे राजा को कर चाहिए तो कहो स्वयं आकर ले जाये।

रघु ने निर्णय लिया।
हम विश्व-विजय को जायेंगे। बिना सम्पूर्ण पृथ्वी जीते हम वापस नहीं आयेंगे।

और एक विशाल सेना के साथ वे लक्ष्य प्राप्ति को चल दिये।

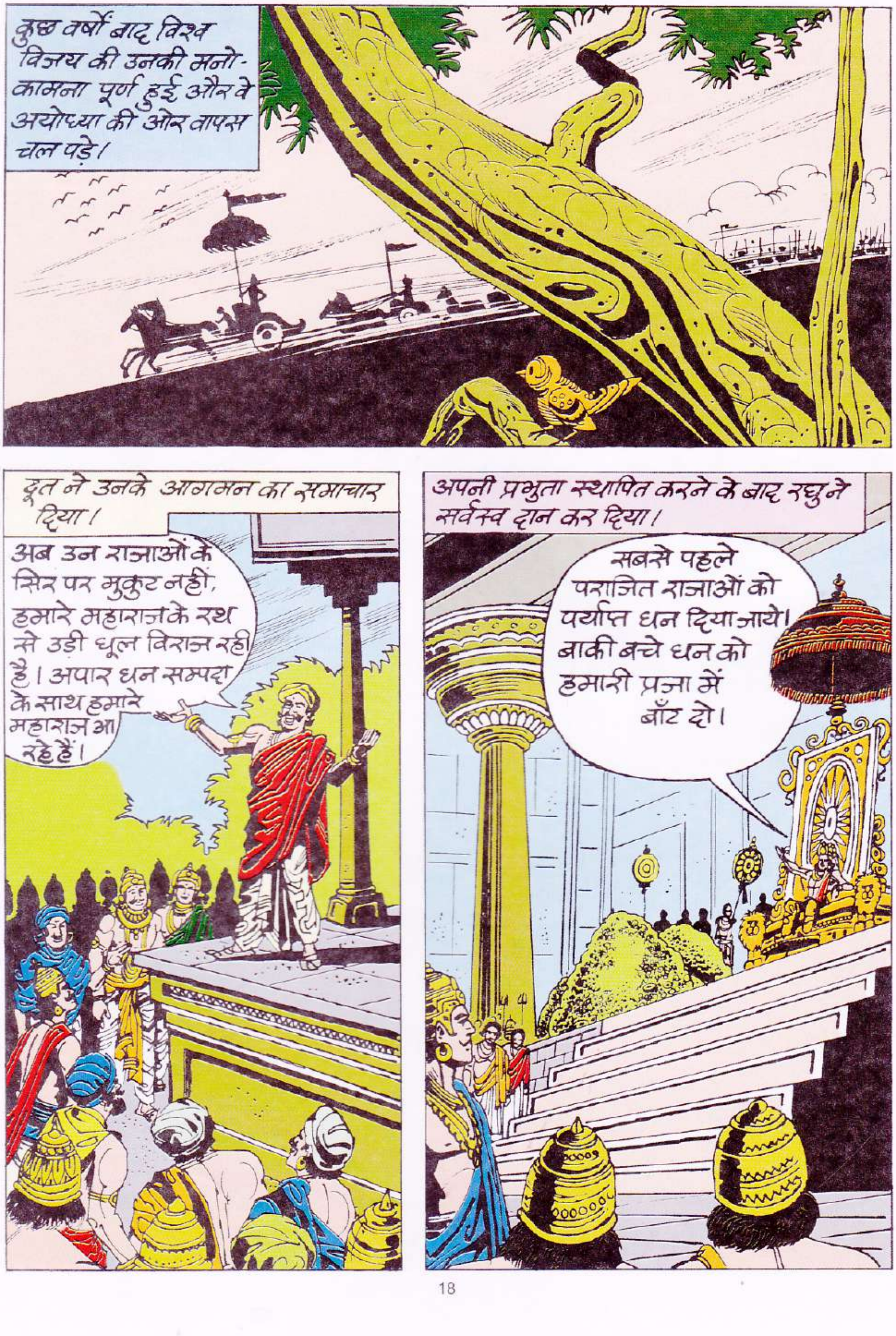
कुछ वर्षों बाद विश्व विजय की उनकी मनोकामना पूर्ण हुई और वे अयोध्या की ओर वापस चल पड़े।
दूत ने उनके आगमन का समाचार दिया।
अब उन राजाओं के सिर पर मुकुट नहीं, हमारे महाराज के रथ से उड़ी धूल विराज रही है। अपार धन सम्पदा के साथ हमारे महाराज आ रहे हैं।
अपनी प्रभुता स्थापित करने के बाद रघु ने सर्वस्व दान कर दिया।
सबसे पहले पराजित राजाओं को पर्याप्त धन दिया जाये। बाकी बचे धन को हमारी प्रजा में बाँट दो।

जब सब कुछ बाँट दिया गया तब एक युवा साधु आया।
दुख है, अब तो कुछ बचा ही नहीं।
पधारिए, महाराज! आपके गुरु कैसे हैं? कहिए, मैं क्या सेवा कर सकता हूँ?
सब शुभ मंगल है, राजन्! अपने गुरु को देने के लिए दक्षिणा चाहिए, वह लेने आया था। ख़ैर, कहीं और जाकर प्रयास करूँगा।
साधु जब जाने लगा –
ठहरिए, महाराज! ख़ाली हाथ कैसे जाने दूँ। आपके गुरु की क्या दक्षिणा है?
साधु ने जब बताया तो –
इतना धन तो अब केवल कुबेर के पास है। उनसे मुझे लाना होगा।

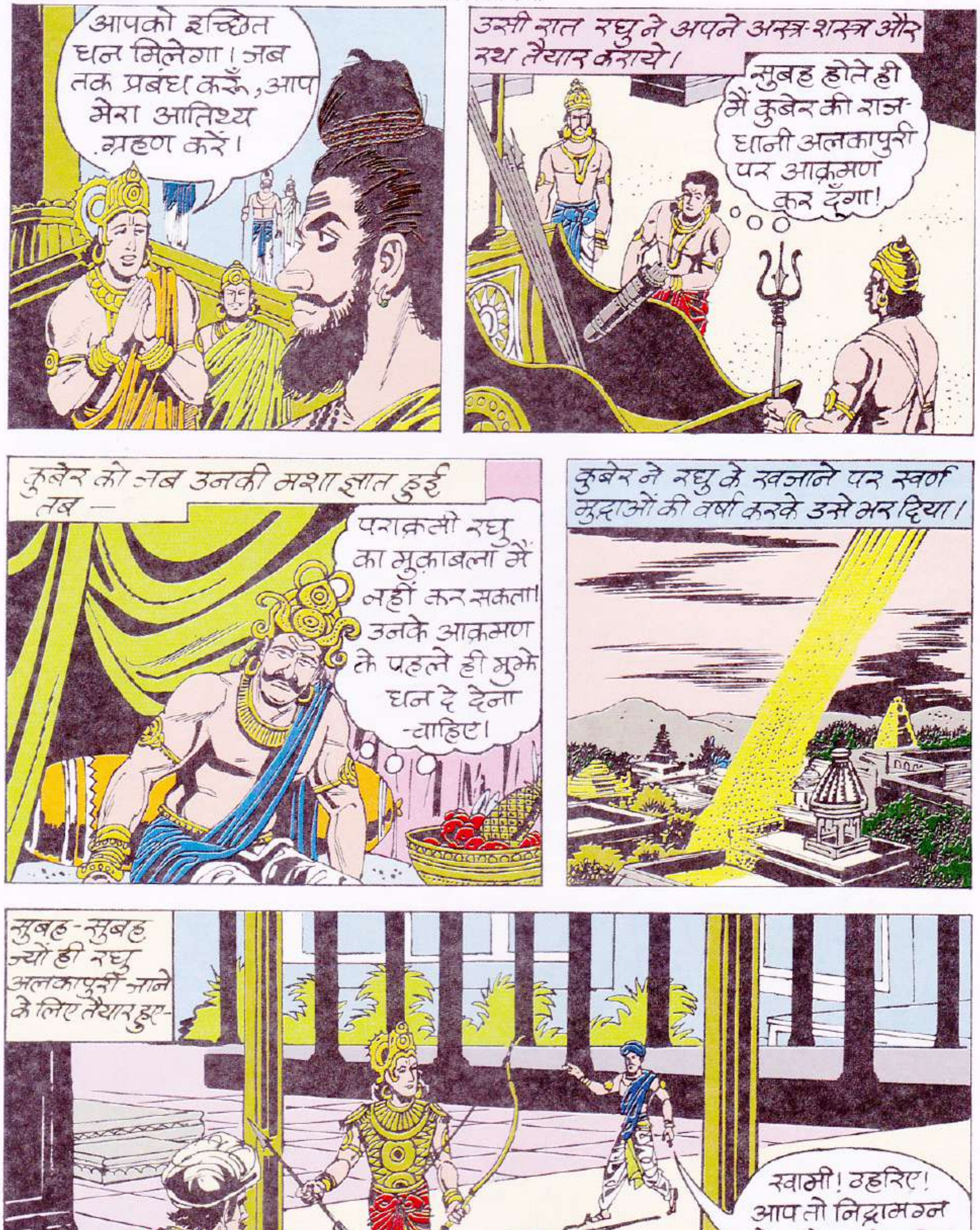
आपको इच्छित धन मिलेगा। जब तक प्रबंध करूँ, आप मेरा आतिथ्य ग्रहण करें।
उसी रात रघु ने अपने अस्त्र-शस्त्र और रथ तैयार कराये।
सुबह होते ही मैं कुबेर की राजधानी अलकापुरी पर आक्रमण कर दूँगा!
कुबेर को जब उनकी मशा ज्ञात हुई तब —
पराक्रमी रघु का मुकाबला मैं नहीं कर सकता। उनके आक्रमण के पहले ही मुझे धन दे देना चाहिए।
कुबेर ने रघु के खजाने पर स्वर्ण मुद्राओं की वर्षा करके उसे भर दिया।
सुबह-सुबह ज्यों ही रघु अलकापुरी जाने के लिए तैयार हुए-
स्वामी! ठहरिए! आप तो निद्रामग्न थे और कुबेर ने आपके खज़ाने भर दिये हैं।

जब रघु ने साधु को बताया तो वह आश्चर्यचकित रह गया।
सभी महान राजाओं को रत्नगर्भा पृथ्वी अपनी सम्पदा खुशी से देती है। कितना महान होगा वह जिसके लिए आकाश भी स्वेच्छा से धन बरसाता है।
राजन्! अपने ही समान महान पुत्र के आप पिता बनेंगे।
वरदान स्वरूप पुत्र जन्म हुआ।
इसका नाम अज रखेंगे।
अज भी बड़ा होकर पिता की तरह ही प्रतिभावान और पराक्रमशाली हुआ। अज की प्रतिभा निरंतर निखर रही थी।

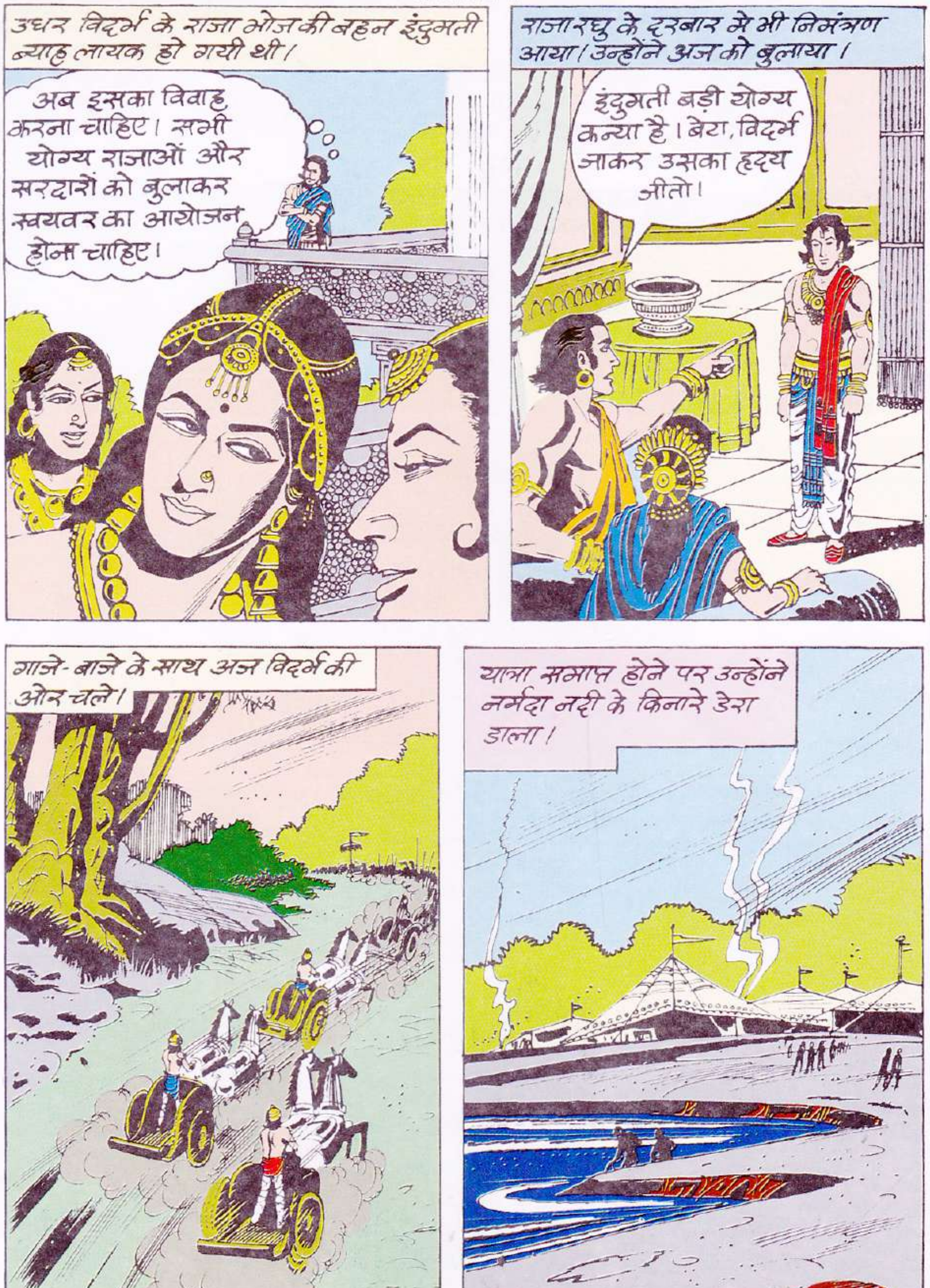

उधर विदर्भ के राजा भोज की बहन इंदुमती ब्याह लायक हो गयी थी।
अब इसका विवाह करना चाहिए। सभी योग्य राजाओं और सरदारों को बुलाकर स्वयवर का आयोजन होना चाहिए।
राजा रघु के दरबार में भी निमंत्रण आया। उन्होंने अज को बुलाया।
इंदुमती बड़ी योग्य कन्या है। बेटा, विदर्भ जाकर उसका हृदय जीतो।
गाजे-बाजे के साथ अज विदर्भ की ओर चले।
यात्रा समाप्त होने पर उन्होंने नर्मदा नदी के किनारे डेरा डाला।

एक मत्त हाथी ने उनपर आक्रमण किया।
अज ने अपना भाला उठाया...
...और हाथी की ओर साध कर फेंका।
जैसे ही भाले ने हाथी को बेधा...
...हाथी एक गंधर्व के रूप में प्रकट हुआ।
तुमने मुझे शाप-मुक्त किया। पुरस्कार स्वरूप यह मंत्रबद्ध भाला स्वीकार करो। यह पूरी की पूरी सेना को सुला सकता है।

दूसरी सुबह अज दलबल के साथ आगे बढ़े।
गंधर्व से भेंट इस बात का संकेत है कि शकुन अच्छा है! काश! दुल्हन मुझे ही मिले!
विदर्भ में राजा भोज स्वयं अज की अगवानी को आये।
रघु-पुत्र का स्वागत है। तुम्हारे लिए विशेष महल बनवाया है उसमें रात्रि-विश्राम करो। कल स्वयंवर में तुम्हारे सिंहासन तक तुम्हें मेरा दूत ले जायेगा।
दूसरे दिन जैसे ही अज स्वयं-वर-मंडप में आये –
रघु का पुत्र!
अब भला दुल्हन हमें क्या मिलेगी?
काश! मैं यहाँ आया ही न होता!

राजकुमारी के आगमन से पूर्व चारों ओर सन्नाटा छा गया। सब धड़कते दिल से अपने भाग्य जागने की प्रतीक्षा करने लगे।
इंदुमती की पालकी भीतर आयी।
सब राजकुमारी को एकटक देखने लगे। राज दासी सुनंदा उसे प्रत्येक राजा का परिचय देती चल रही थी।
मगध के पराक्रमी और धर्मात्मा राजा।
आगे बढ़ो।

सबको निराश करती राजकुमारी बढ़ती जा रही थी।
अंगदेश के सुदर्शन राजा!
अवंती के प्रतापी राजा जो रूप और शौर्य में देवताओं को भी मात करते हैं।
मुझे तो ऐसा नहीं लगता।
अंततः वह अज के सामने आयी।
अयोध्या के युवराज अज। परम प्रतापी रघु के पुत्र।
इंदुमती कुछ बोली नहीं, केवल लजा गयी।
लगता है यह पसंद है। ज़रा छेड़ूँ।
आगे बढ़ू राजकुमारी ?
इंदुमती ने जैसे सुना ही नहीं। उसकी दृष्टि अज के नयनों में अटक गयी थी। उसने वरमाला अज के गले में डाल दी। चारों ओर से हर्षध्वनि होने लगी।
कितनी सुंदर जोड़ी है! जैसे गंगा का समुद्र से संगम हो रहा है।

प्रतिस्पर्धी राजा हताश भाव से युगल को देखते रह गये। राजा भोज इंदुमती और अज को नगर परिक्रमा के लिए ले गये।
रघु ने हम सबको परास्त किया था और अब उसका बेटा हमारे बीच से हमारे योग्य राजकुमारी को ले गया।
हमें इस अपमान का बदला लेना चाहिए।
हम अयोध्या के रास्ते में ही इसे लूट लेंगे।

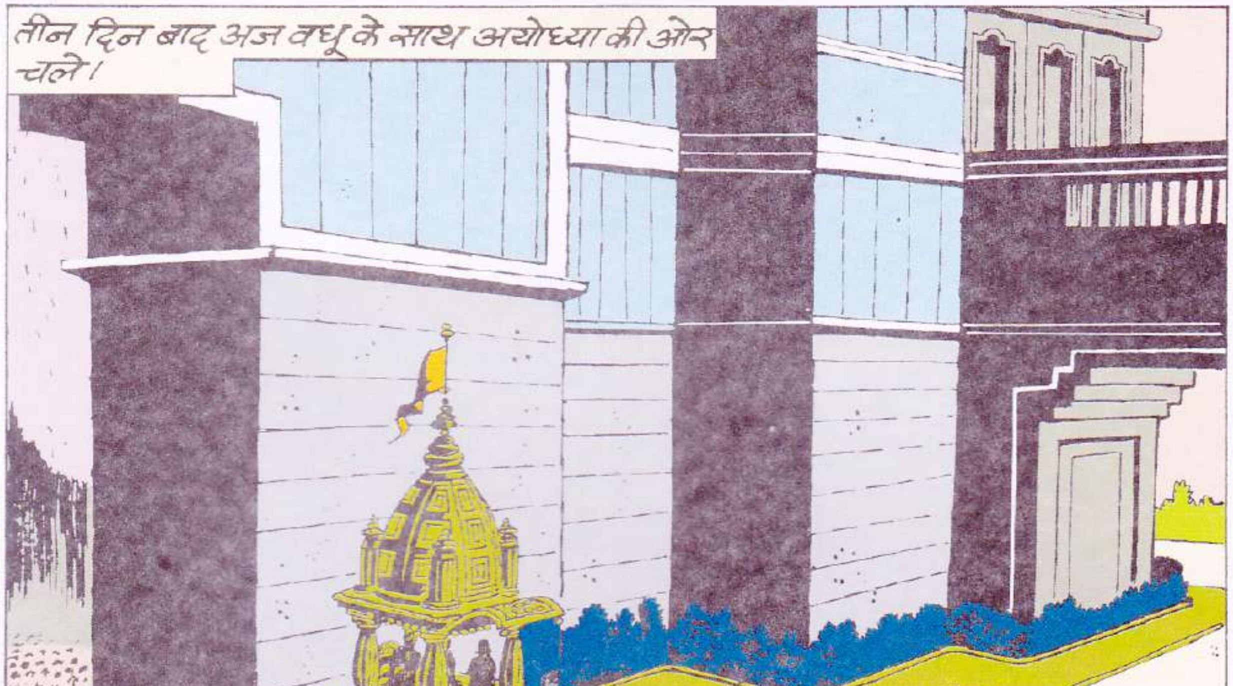
तीन दिन बाद अज वधू के साथ अयोध्या की ओर चले।

अचानक –
तीर! निराश प्रेमप्रार्थियों का घेराव लगता है।
स्वामी!
धीरज रखो, राजकुमारी! अब तुम अज के लिए प्राणों से भी बढ़ कर हो। वह तुम्हें खो नहीं सकता!
उन्होने अपने एक स्वामिभक्त वृद्ध दरबारी से कहा –
मैं अपनी वधू की ज़िम्मेदारी आपको सौंपता हूँ। मैं शत्रु से निबटता हूँ। आप इन्हें संभा-लिए।
पत्नी को सुरक्षित छोड़ कर अज शत्रु पर टूट पड़े।
रौंद दो।

घमासान युद्ध हुआ।

व्यर्थ के रक्तपात से बचने की दृष्टि से अज को एक उपाय सूझा।
मुझे उस मंत्र-बद्ध भाले का प्रयोग करना चाहिए।

देखते-देखते बौखलाये हुए सारे राजा अपनी सेनाओं सहित गहरी नींद में डूब गये। युद्ध का शोर थम गया।

शंखध्वनि करके अज ने विजय की घोषणा की।
फिर इंदुमती के पास गये।
लो, ये देखो अपने शत्रुओं को ऐसे लोग भला तुम्हें मुझसे छीन सकते थे?
अयोध्या-यात्रा फिर प्रारंभ हो गयी।
अपने इन शक्तिशाली अधीन राजाओं पर मेरी विजय का हाल जब मेरे शूरवीर पिता सुनेंगे तो बहुत खुश होंगे।
जब वे अयोध्या पहुँचे –
तुम्हारे आने से पहले ही तुम्हारे पराक्रम की कीर्ति यहाँ पहुँच चुकी है। राजपरिवार तुम दोनों के अभिनंदन के लिए आतुर है।

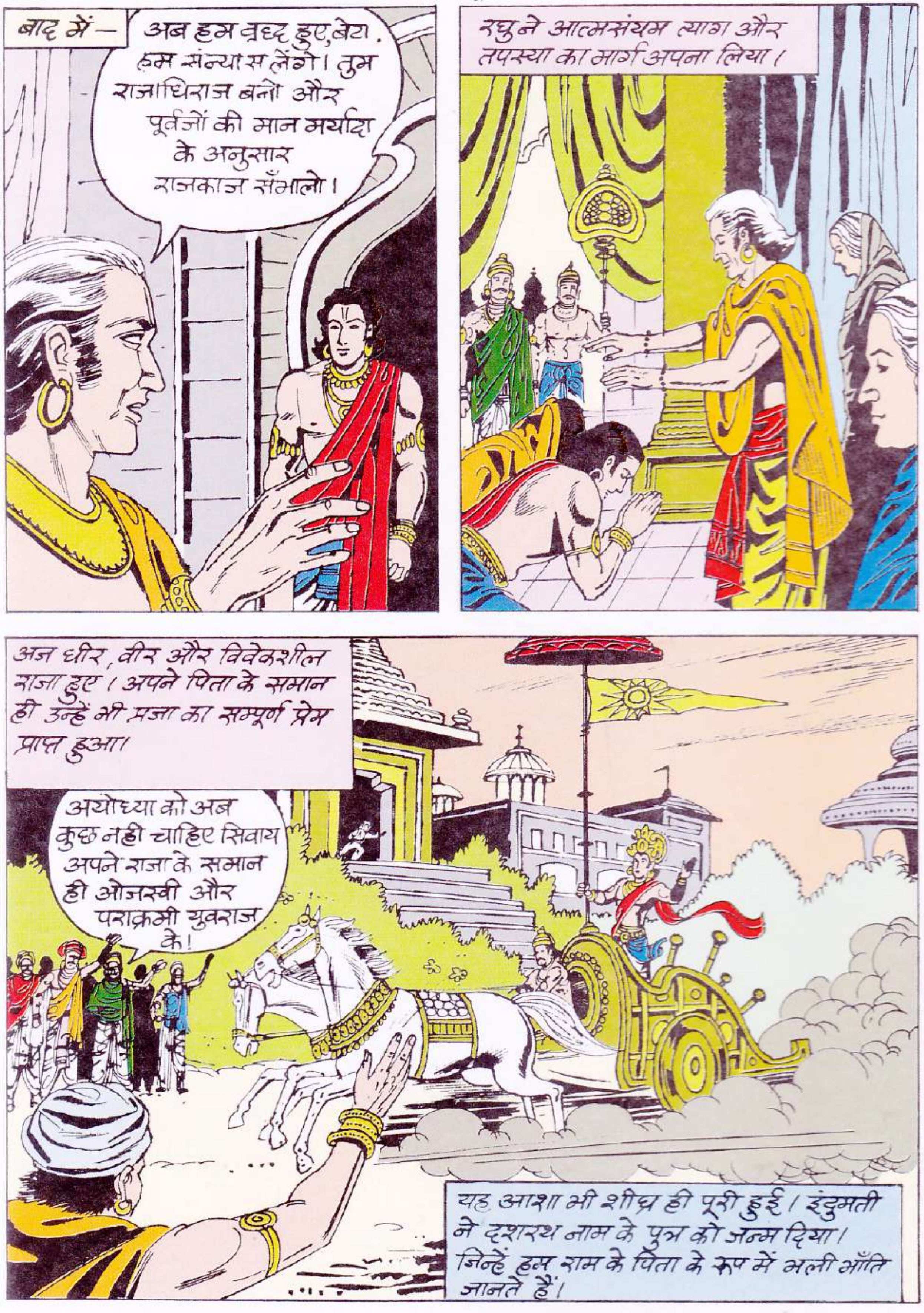
बाद में –
अब हम वृद्ध हुए, बेटा, हम संन्यास लेंगे। तुम राजाधिराज बनो और पूर्वजों की मान मर्यादा के अनुसार राजकाज सँभालो।
रघु ने आत्मसंयम त्याग और तपस्या का मार्ग अपना लिया।
अज धीर, वीर और विवेकशील राजा हुए। अपने पिता के समान ही उन्हें भी प्रजा का सम्पूर्ण प्रेम प्राप्त हुआ।
अयोध्या को अब कुछ नहीं चाहिए सिवाय अपने राजा के समान ही ओजस्वी और पराक्रमी युवराज के!
यह आशा भी शीघ्र ही पूरी हुई। इंदुमती ने दशरथ नाम के पुत्र को जन्म दिया। जिन्हें हम राम के पिता के रूप में भली भाँति जानते हैं।

भारतीय उत्कृष्ट
साहित्य

राम के पूर्वज

सदियों से माना जाता रहा है कि राम एक आदर्श राजा थे। जब गाँधी जी ने अपनी कल्पना के स्वराज्य का नाम रामराज्य रखा तो उनके ध्यान में राम के आदर्श राज्य का ही रूप था। राम के इक्ष्वाकुवंशीय पुरखे भी उतने ही पराक्रमी और उदार थे जितने स्वयं राम। इस कथा में राम के उन्ही महान पुरखों का परिचय दिया गया है। महाकाव्य में जीवन का सम्पूर्ण चित्रण होता है इसलिए उसमें नायक के गुणों के साथ साथ उसकी कमजोरियों का चित्रण भी रहता है। वाल्मीकि की रामायण से प्रेरणा पाकर कालिदास ने अपना महाकाव्य रघुवंश लिखा। उस काव्य में राम के पूर्वजों का इतिहास बताते हुए कालिदास ने उस वंश के हासकी कहानी भी कही है। परंतु हमारी इस कथा में राम के पूर्वजों के उस पक्ष का चित्रण है जिसमें उन्होंने महान कार्य करके यश और गौरव प्राप्त किया था।

अमर चित्र कथा के अन्य:

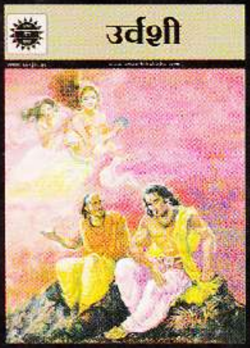

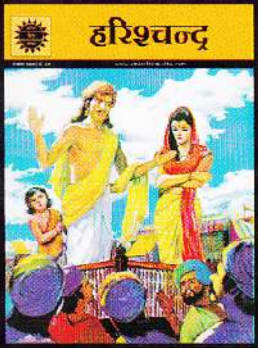

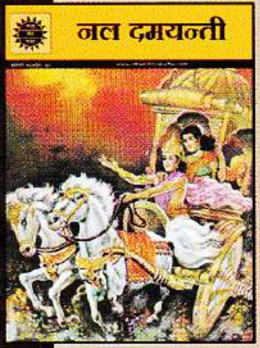

ये भी पढ़ें :

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ

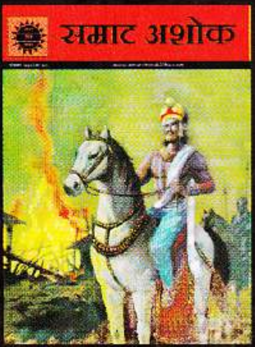

वीरांगना

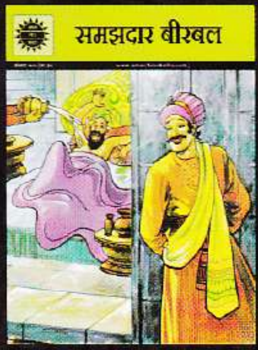

हास-परिहास और दंतकथाएँ

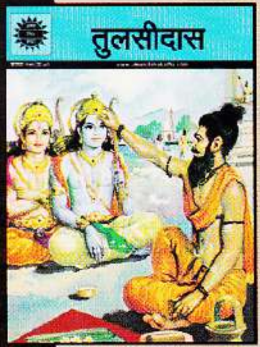

दिव्यदृष्टा

Buy online at www.amarchitrakatha.com

ISBN 978-81-8482-270-
9 788184 822700